Vol II Issue X

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidiciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue.10,Nov. 2012
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

समकालीन उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन की अतृप्त काम–भावना एवं काम तृप्ति की तलाश (विशेष संदर्भ उषा प्रियंवदा का उपन्यास साहित्य)

संदीप श्रीराम पाईकराव

अध्यक्ष, हिंदी विभाग
इंदिरा गांधी महाविद्यालय, सिडको, नांदेड़

सारांश :

मानवी वर्तन एवं आचरण के मूल में जिन जैविक प्रेरणाओं का महत्व होता है उसके अंतर्गत काम–भावना एक महत्वपूर्ण है। किंतु मानवी सभ्यता ने सामाजिक, धार्मिक एवं नैतिक अनुशासन एवं नियमों से अपने जीवन को मर्यादापूर्ण बनाया है। इस मर्यादा पूर्ण जीवन के आधार पर मनुष्य ने अन्य प्राणीमात्राओं से अपने को पृथक सिध्द किया है। परिणाम स्वरूप समाज में जीवन यापन करते समय काम–भावना की मुक्त अभिव्यक्ति नहीं हो पाती। इस भावना का हेतु–पुरस्सर निरोधन होता रहता है। काम–भावना की अभिव्यक्ति का दमन होता है, जिसका प्रभाव मनुष्य के समस्त वर्तन पर होता है। प्रसिध्द मनोवैज्ञानिक फ्रायड ने मानव की दमित वासना को अचेतन मन की संपूर्ण शक्तियों का स्त्रोत माना है। मध्यवर्ग पर इस नैतिक बंधनों का जबरदस्त प्रभाव है। "मध्यवर्ग ने अपने समाज को जिन नैतिक नियमों–बंधनों से जकड़ा हुआ है, उनमें सेक्स संबधी बंधन प्रबलतम है। मध्यवर्ग अन्य वर्गों से अपनी संस्कृति तथा जीवन की उच्चता की घोशणा कर सके, इसलिए उसने अपने समाज को कृत्रिम और कठोर बंधनों में बांधकर स्वाभाविक जीवन यापन करने के लिए विवश कर दिया है।"

प्रस्तावना :

सहज जीवन यापन करने हेतु काम–भावना की तृप्ति अत्यंत आवश्यक है। जिस प्रकार मनुष्य के लिए अन्न, वस्त्र तथा आवास उसकी मूलभूत आवश्यकताएँ हैं, ठिक उसी प्रकार शरीर की प्राकृतिक भूख 'काम' भी अत्यंत आवश्यक है। मनुष्य के वर्तन का मूल काम–भावना है। इर्श्या, द्वेश, मत्सर, अपराध, असंतोष, तिरस्कार, स्वेच्छाचार आदि का समावेश वर्तन में होता है। काम–तृप्ति का समाजमान्य रूप विवाह है। परंतु आधुनिक मध्यवर्ग में युवक तथा युवतियों में विवाह के प्रति अनास्था का भाव निर्माण हो रहा है। विवाह अपने कॅरियर में बाधा प्रतित हो रहा है, साथ ही ज़िम्मेदारी की भावना के कारण युवक–युवतियाँ विवाह से कतराने लगे हैं। परिणाम स्परूप काम अतृप्ति, विकृति एवं काम तृप्ति की तलाश जैसी स्थितियाँ पैदा हो रही हैं। उषा प्रियंवंदा ने इस युवा मानसिकता को अपने उपन्यास साहित्य में भँलि–भाँति आंकने का प्रयास किया है।

'पचपन खंभे लाल दीवारे' उपन्यास भारतीय परिवेश में लिखा गया उशा जी का पहला उपन्यास है। जिसमें लेखिका ने भारतीय यौन मूल्यों का अनुपालन करते हुए कहीं पर भी काम तृप्ति एवं अतृप्त काम भावना के भड़किले चित्र उपस्थित नहीं किए हैं। 'रूकोगी नहीं राधिका' उपन्यास में काम अतृप्ति एवं काम तृप्ति की भावना को मध्यवर्गीय पात्रों के माध्यम से सांकेतिक रूप में अभिव्यक्त किया है। उपन्यास का मध्यवर्गीय पात्र अक्षय लज्जालु प्रवृत्ति का है। जीवन में जब भी कोई युवती आई तब अक्षय ने अपनी भावनाओं को कड़े नियंत्रण में रखा है। अक्षय ने कभी किसी युवती से प्रेम नहीं किया परंतु आकर्षण ज़रूर अनुभव किया। भावनाओं का दमन करने के कारण उसमें कहीं ना कही काम अतृप्ति की भावना उसके मस्तिश्क में बसी रहती है। अनिला के प्रति वह सोचता है। कि, "यदि वह कभी एकांत पाकर अनिला को बाँहो में लेना चाहे, तो वह बड़ी सहजता से खिंच आएगी और दूसरे ही क्षण कहेगी, 'आप डैडी से बात क्यों नहीं करते!' वह बंधना चाहता है, एक बार अनुभव में आकंठ डूबना चाहता है।"[2] राधिका के साहचर्य में अपनी दमित भावना को पूर्ण करने की तलाश करता है। वह सोचता है कि, "इस बार वह अपने को दमित नहीं करेगा, अगर एक उमड़ती हुई लहर उसे बहा ले जाएगी, तो उससे ऊबरने के लिए हाथ–पैर नहीं[3] मारेगा।" उपन्यास की नायिका राधिका तृप्ति के लिए भटकती रहती है। पहले तो डैन नामक विदेशी व्यक्ति के साथ विदेश जाती है, परंतु डैन के साथ अधिक समय तक जुड़ी नहीं रहती। वापस लौटकर अक्षय के संपर्क में आती है। अक्षय को भी एक क्षण दुर्बल पाकर उसके साथ संबंध स्थापित करती है। इस संबंध को लेकर वह लज्जित नहीं है, बल्कि वह सोचती है, "नहीं मैं उसके लिए लज्जित नहीं हूँ, बल्कि और उत्कंठिता" अक्षय के चले जाने के पश्चात् मनीष के प्रति आकर्षित होती है। मनीश ने भी उसकी कामना की थी। श्उसकी ओर तीव्र शारीरिक आकर्षण अनुभव करते हुए भी वह संयत रही है।"[5] परंतु एक दिन मनिष के साथ ड्राइव पर जाने पर श्वह जानती थी कि वह चाह रही है कि मनीष उसे बाँहों मे ले ले।" यहाँ राधिका की अतृप्त काम–भावना का दर्शन होता है।

मध्यवर्गीय जीवन के अतृप्त काम भावना एवं काम तृप्ति की तलाश का यथार्थ तथा अधिक खुलकर चित्रण 'शेष यात्रा' उपन्यास में किया है। उपन्यास की कथा विदेशी भूमिपर फलती–फूलती है। प्रवासी भारतीयों की मनोदशा का अंत्यत सूक्ष्म अंकन उपन्यास में हुआ है। उपन्यास में डॉ. प्रणव, डॉ. विभा, कीरत, तथा उपन्यास की नायिका अनु के माध्यम से विदेश में बसे भारतीय मध्यवर्गीय लोगों के संत्रास का चित्रण किया गया है।

वस्तुतः काम मनुष्य की मुलभूत आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति में काम को पुरूषार्थ के महत्वपूर्ण सोपान का दर्जा प्राप्त हुआ है। परंतु पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित मध्यवर्गीय काम भावना में पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। जो चर्चा का विषय नही. था उस पर मध्यवर्गीय स्त्री–पुरूष खुलकर चर्चा कर रहे हैं। काम की तृप्ति से मनुष्य स्वस्थ्य एवं मन प्रफुल्लित रहता है, तो अतृप्ति से जीवन अशांत बन जाता है। 'शेश

DSpace™

यात्रा' उपन्यास की डॉ. विभा का कथन मध्यवर्गीय नारी की काम अतृप्ति का बयान करता है "अच्छे घर, मियाँ और बच्चों के बावजूद भी तो एक औरत को कुछ खाली–खाली लग सकता हैं।"

काम–अतृप्ति से व्यक्ति मानसिक रोग का शिकार बन जाता है। उपन्यास की पात्र कीरत कुछ ऐसी ही मानसिक रोग का शिकार बन गयी है। पति के घर पर नहीं रहने पर उसे नींद की गोली का सहारा लेना पड़ता है। अपनी इस दशा को स्वयं उपन्यास की नायिका अनु के समक्ष स्पष्ट करती है, "धनराज के जाने के बाद शाम बीतती ही नहीं, न रात को नींद आती है। मुझे अपने बगल में धनराज का शरीर रोज चाहिए। जब वह नहीं होता तो गोली खाकर सोना पड़ता है।" निःसंदेह इसमें अधिक समय तक विदेश में रहने के कारण वहाँ की सेक्स भावना का प्रभाव झलकता है।

'शेष यात्रा' उपन्यास का नायक डॉ. प्रणव स्वयं काम अतृप्ति का शिकार है। उसकी काम–भावना किसी एक संबंध से तृप्त नहीं होती। अतः काम तृप्ति की तलाश में नए संबंध स्थापित करता है। नई–नई नर्सें, नीरजा, डॉ. विभा, नमिता आदि के साथ उसके संबंध रहे हैं। उसकी अतृप्ति उसके आचरण में अनु अनुभव करती है। श्वह प्रणव, जो देर तक उसे सहलाता, दुलारता रहता था, इस वक्त कहाँ खो गया था! रह गया था एक पुरूष मात्र, जिसका अव्यक्त रोश, और ऐंठती हुई ताकत वह महसूस कर रही थी, पर जिसका कारण जानने में वह असमर्थ थी।"[9] प्रणव की अतृप्ति का परिचय अनु के कथन में स्पष्ट झलकता है, श्मैं तो अपने पत्नीत्व में डूबी थी, पर शायद प्रणव का एक ही स्त्री से काम नहीं चलता।"[10]

'शेष यात्रा' उपन्यास की नमिता पति के आत्महत्या करने के पश्चात् काम तृप्ति की तलाश करती रहती है। आस्मा के घर रहते एक दिन प्रणव जब रात के लिए रूकता है, तो नमिता चुपचाप उसके पास आकर सोती है। प्रणव सोचता है, "अगर कोई स्त्री रात के अँधेरे में एक अपरिचित पुरूष के पास आकर लेट गई है, तो यह उस स्त्री की अपनी ज़रूरत अपनी ज़िम्मेदारी है।" नमिता पर वैसै कोई दबाव नहीं है, और ना ही उसकी कोई विवशता है। प्रणव और नमिता मात्र काम तृप्ति के लिए संबध स्थापित करते है। "न कोई अपेक्षा, न कोई अधिकार। कभी सप्ताह में कई दिन साथ बीतते, कभी बिना मिले हप्ते निकल जाते। मिलने पर न अपराध–भावना, न ग्लानि। केवल एक सहज, सामान्य भाव, कुछ बाँटने और बँटा लेने की अनुभूति, गहरे बँधने का न प्रणव के पास समय है, न अभिरूचि और नमिता को भी यही ठीक लगँता होगा।"

'अंतर्वशी' उपन्यास का राहुल अपने मित्र शिवेश तथा शिवेश की पत्नी वाना के सानिध्य में रहते हुए अनायास ही वाना के प्रति आकर्षित होता है। वाना के सान्निध्य से उसकी काम–भावना उद्दीप्त होती है। बनारस की वनश्री को अमरीका में वाना के रूप में देखकर "राहुल के मन में उठा कि वह वाना को अपनी बाँहों में खींच ले और धीरे–धीरे कोमलता से उसके होठों को चूमता जाए, चूमता रहे, गुलाब की पाँखुड़ी जैसे उसके अधखुले होंठ।" राहुल का इस प्रकार सोचना उसकी काम–अतृप्ति का ही प्रमाण है।

'अंतर्वशी' उपन्यास की नायिका बेहद प्यार करनेवाला पति होने के बावजूद भी काम जीवन में सतुष्ट नहीं है। शिवेश के साथ अंतरंग के क्षणों में सोचती है, "कितनी हड़बड़ी रहती है इन्हे, जुट जाते है अपने सुख में। पूरा कपड़ा अलग करने का समय भी नहीं लेते। मेरा भी शरीर है, उसे भी दुलार–प्यार की माँग है। नहीं मैं पत्नी हूँ, झुलाने, खिलाने, झेलने के लिएँ।" अर्थात वाना की मानसिकता बन जाती है कि शिवेश केवल अपना सुख, अपनी चाहत और अपनी पूर्णता चाहता है। अपनी अतृप्त भावना को क्रिस्तीन के सम्मुख प्रकट करती वाना कहती है, श्सच कहूँ क्रिस्तीन, एकदम सच ?यह बहुत बड़ी बेईमानी, बहुत बड़ा विश्वासघात है, पर शिवेश को पहले दिन से ही पति रूप में ग्रहण करना मेरे लिए यातना रही है, घोर टौर्चर।" अतः अनायास ही काम–तृप्ति हेतु पति के मित्र राहुल के प्रति आकर्षित होती है। राहुल के साहचर्य में वाना की काम–भावना उद्दीप्त होती है। एक बार राहुल से मिलने राहूल के ऑफीस जाती है। राहुल उसे चाय पीने के लिए कैफे में ले जाना चाहता है, "पर वह नीचे जाकर चाय नहीं पीना चाहती। एक पागल चाहत उसके मन में जगने लगी है, यही दप्तर के ठीक सामने सबके आते–जाते, वह राहुल के कंधे बाँहो से घेर ले और अपने होंठ उसके होठों पर रख दें। दस मिनट वह यों ही खड़े रहे, बाहों में बँधे, एक दूसरे को चूमते। शिवेश की पत्नी और शिवेश का दोस्त नहीं, केवल एक पुरूष, एक स्त्री।" वाना की राहुल के प्रति आसक्ति बढ़ती ही जाती है। राहुल वाना को कम्प्युटर पर काम करना सीखाने के लिए झुककर वाना को समझाता है। परंतु वाना राहुल के सान्निध्य से अपनी काम लालसा पूर्ण करना चाहती है। वाना की इच्छा होती है कि, श्उसकी सफेद कमीज़ के दो बटन खोल दे जिससे राहुल के शरीर की मादक सुगंध उसके रेशे–रेशे को पुलकित कर सके। क्या मेरी अपनी कोई सुगंध, कोई रसायन नहीं है, वाना सोचने लगती है क्या मेरा कोई आकर्षण नहीं ?क्या मेरा स्त्री अस्तित्व; यह कसी हुई कमर और उन्नत उरोज; क्या राहुल इतना पत्थर, इतना तटस्थ है कि उस पर कोई असर नहीं होता।" वाना का इस प्रकार सोचना अतृप्त काम का ही परिचायक है।

निष्कर्ष :–

1)मानवी वर्तन एवं आचरण के मूल में जिन जैविक प्रेरणाओं का महत्व होता है, उसके अंतर्गत काम–भावना महत्वपूर्ण है। काम–भावना की तृप्ति से मनुष्य जीवन स्वस्थ्य एवं प्रफुल्लित रहता है, तो अतृप्ति से जीवन अशांत बन जाता है,

2)भारतीय सभ्याता ने सामाजिक, धार्मिक एवं नैतिक अनुशासन एवं नियमों द्वारा जीवन को मर्यादापूर्ण बनाया है। परिणामतः समाज में जीवनयापन करते समय काम–भावना की मुक्त अभिव्यक्ति नहीं हो पाती। हेतु–पुरस्पर निरोधन तथा काम–भावना का दमन मनुष्य के समस्त वर्तन को प्रभावित करता है।

3)समकालीन युवा वर्ग में महत्वकांक्षा की दौड़, कॅरियर की होड़ तथा दायित्वों के बोझ आदि के कारण विवाह के प्रति अनास्था का भाव निर्माण हो रहा है।

4)काम–तृप्ति का समाजमान्य रूप विवाह है। परंतु विवाह में विलंब तथा विवाह से कतराने की प्रवृत्ति के कारण काम अतृप्ति, विकृति एवं काम तृप्ति की तलाश जैसी स्थितियाँ पैदा हो रही है।

5)काम–अतृप्ति से एक ओर व्यक्ति कुंठित एवं मानसिक रोग का शिकार बन जाता है तो दूसरी ओर बलात्कार जैसी अपराधिक वृत्ति की ओर बढ़ता है।

6)पाश्चात्य मुक्त यौन–भावना के प्रभाव स्वरूप मध्यवर्गीय काम–भावना में पर्याप्त परिवर्तन हुआ है, जो चर्चा का विशय नहीं था उस पर स्त्री–पुरूष खुलकर चर्चा कर रहे हैं।

7)'फ्रि लिव इन' जैसी संकल्पना को मान्यता दी जा रही है।

निःसंदेह उषा जी के उपन्यास संसार की भावभूमि भारतीय तथा विदेशी रही है। विदेश में बसने के पश्चात् अप्रवासी भारतीय लोगों की मानसिकता पर विदेशी प्रभाव का अत्यंत सुक्ष्मता से अध्ययन कर उसे अभिव्यक्ति देने का प्रयास उषा जी ने किया है। काम भावना एवं यौन संबंधो का चित्रण करना उषा जी का लक्ष्य नहीं रहा और ना ही उन्हें अभिप्रेत रहा है। परंतु एक सजग साहित्यकार युगबोध का सशक्त अंकन अपने साहित्य में करता है। अतः उषा जी के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन की अतृप्त काम भावना एवं काम तृप्ति की तलाश का अंकन

DSpace™

स्वाभाविक है।

संदर्भ सूची :

1.डॉ. निर्मम हेमराज, हिंदी उपन्यासो में मध्यवर्ग पृ. 205
2.उषा प्रियंवदा, रूकोगी नहीं राधिका पृ. 57
3.वही, पृ. 58
4.वही, पृ. 101
5.वही, पृ. 101
6.वही, पृ. 110
7.उषा प्रियंवदा, शेष यात्रा पृ. 24
8.वही, पृ. 32
9.वही, पृ. 42
10.वही, पृ. 69
11.वही, पृ. 94
12.वही, पृ. 9
13.उषा प्रियंवदा, अंर्तवशी. पृ. 10
14.वही, पृ. 61
15.वही, पृ. 105
16.वही, पृ. 154
17.वही, पृ. 157

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net